आध्यात्मिक उन्नयन का आधारः पर्यटन

*डॉ. सरोज मालपानी

''देश विदेशों में होता जा रहा पर्यटन का प्रसार।
सुस्वास्थ्य, मनोरंजन, आर्थिक उन्नति का भी पर्यटन द्वार।
भौतिकता की इस चकाचौंध में भटक रहा जन–मन अपार।
ऐसे में पर्यटन निश्चय ही आध्यात्मिक उन्नति का आधार।''

दक्षिण एशिया धर्म एवं अध्यात्म के क्षेत्र में सदैव अग्रणी रहा है। इसी कारण यह पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बना रहा है। चाहे हिमालय की गोद हो या गंगा का किनारा, बुद्ध का मन्दिर हो या हो गुरूद्वारा, दिल्ली की जामा मस्जिद हो या अयोध्या, मथुरा और काशी स्थित राम, कृष्ण व शिव की भक्ति का नजारा, पर्यटन को पुष्ट करने वाले ये विविध आयाम निश्चय ही आध्यात्मिक उन्नयन के आधार हैं।

प्राकृतिक वैभव से परिपूर्ण, आध्यात्मिक ऊँचाई के स्तम्भ चारों दिशाओं में स्थित चार धाम (जगन्नाथपुरी, द्वारका, बद्रीनाथ और रामेश्वरम्) जनमानस की आस्था के अक्षुण्ण आधार हैं। पहाड़ों में स्थित शिवालय हों या वन प्रान्तर में पूजित देवालय हो, ऊँचे पर्वतों पर बने देवी माता के मन्दिर हों या वसुन्धरा पर सुशोभित देवी देवताओं के पूजा स्थान हों वे सभी पर्यटकोंको आकर्षित भी करते हैं और उनके सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक ज्ञान में अभिवृद्धि के साथ ही आध्यात्मिकता की भावना को बल भी प्रदान करते हैं। भारतीय ही नहीं '' ऐसे विदेशी यात्री भी हैं, जिनकी यात्रा का उद्देश्य धार्मिक रहा है। फाह्यान, ह्वेनसांग और इत्सिंग ये सभी बौद्ध यात्री चीन से भारत आए। बुद्ध की जन्मस्थली को निहारने की लालसा लिए पहले बौद्ध तीर्थयात्री को मध्य एशिया के रेगिस्तान, पामीर के पठार और हिंदकुश पर्वत से गुजरकर भारत पहुँचने में 6 साल लगे। भारत पहुँचकर उसने गंगा नदी की घाटी में स्थित बौद्ध स्थलों को देखा। कपिलवस्तु, बुद्ध का जन्म स्थान, बोधगया, बुद्ध के बोधत्व प्राप्ति के स्थान, 'सारनाथ' जहाँ बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश दिया था तथा 'कुशीनगर' बुद्ध के परिनिर्वाण स्थल की यात्रा की। फाह्यान की इस यात्रा से बौद्ध धर्म की व्यापकता का विस्तार हुआ और धर्म स्पष्ट हुआ। यात्रा ने कई नए द्वार खोले।''1

हिन्दी साहित्य में भक्ति के प्रसार के विषय में भ्रमणशीलता के महत्त्व को रेखांकित करते हुए स्पष्ट शब्दों में कहा गया है–

''भक्ति द्राविड़ ऊपजी ल्याये रामानन्द।
परगट किया कबीर ने सप्तदीप नवखंड।''2

वस्तुतः आध्यात्मिक भावना का सहज जुड़ाव कलात्मकता से होता है। इसी कारण कला के विभिन्न रूप– मूर्तिकला, स्थापत्यकला, चित्रकला, काव्यकला और संगीतकला अध्यात्म भावना को पुष्ट और साकार करने वाले विविध आयाम हैं। सभी देवी देवताओं के चित्र और मूर्तियाँ आध्यात्मिकता को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम हैं। ऐतिहासिक,

धार्मिक व अन्य स्थलों पर दर्शनीय मनोहारी स्थापत्य कला में भी अधिकांशतः अध्यात्म का अंकन होता है। वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत आदि प्राचीन ग्रंथों का गहन अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि उनमें वर्णित अधिकांश स्थल आज पर्यटन के केन्द्र बिन्दु हैं और इस दृष्टि से पर्यटन अध्यात्म भावना विस्तार हेतु संजीवनी सिद्ध हो रहा है। हिन्दी साहित्य में समूचा भक्तिकाल और पूर्वापर रचित भक्ति साहित्य हमारे आध्यात्मिक मनोभावों का ही शब्दचित्र है।

ज्ञान और अध्यात्म के अमृतपान हेतु पिपासु कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने 'सम्मिलित गान' कविता में लिखा है–

''इतनी बड़ी पृथ्वी को कितना भर जानता हूँ ?
.....
इसी बेचैनी में
उन ग्रथों को अक्षय उत्साह से पढ़ता हूँ
जिनमें भ्रमण वृत्तान्त हैं।
जहाँ भी चित्रमय वर्ण की वाणी पाता हूँ,
चुनकर ले आता हूँ।
अपने मन के इस ज्ञान दारिद्र्य को
जहाँ तक भर सकता हूँ,
भिक्षा से प्राप्त धन से भर लेता हूँ।
मैं पृथ्वी का कवि हूँ।''3.....

साहित्य के साथ जब संगीत कला का समागम हो जाता है तो भावों का प्रवाह मन को तरंगायित कर ब्रह्मानंद सहोदर रस की सृष्टि करता है। हवेली संगीत, पुष्टिमार्गीय पद गायन, भजन गायन परम्परा और लोक को जीवन देने वाले जागरण आध्यात्मिकता के ही प्रतिरूप हैं।

विदेशी व देशी पर्यटक यहाँ के उपरिवर्णित विविधवर्णी साहित्य, संगीत और कलाओं के भण्डार को देखकर ही आकृष्ट होते हैं। आज एकल परिवार में पला–बढ़ा व्यक्ति यद्यपि सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत को परिवार की क्रोड़ में प्राप्त नहीं कर पाता किन्तु पर्यटन के माध्यम से उसे संस्कृति, इतिहास व आध्यात्मिकता से सम्बद्ध जानकारियाँ मिलती हैं

जो मन को पुनः उसी भारतीय मूल अध्यात्म प्रवाह की आरे अग्रसर करती हैं।

''जब जनमानस की सांस्कृतिक आकांक्षा कलात्मक सौन्दर्य के साथ सहज अभिव्यक्ति पाती है तो उपलब्ध वस्तुओं की सहायता से अपने सुन्दरतम रूप में प्रस्तुत होती है, वही लोक–कला कहलाती है।''[4]लोकगीत, लोक परम्पराएं, लोक चित्र शैली एवं लोक आख्यान जहाँ पर्यटकों को लुभाता है वहीं उन्हें अध्यात्म उन्मुख करने का माध्यम भी है। राजस्थान की लोक कला और लोक अध्यात्म को पर्यटन की प्रवृति ने भारत में ही नहीं विश्व में विख्यात बना दिया है।

वर्तमान में अति भौतिकता से उकताकर मानसिक आनंद की तलाश में प्रौढ़ व्यक्तियों का ही नहीं युवा वर्ग का झुकाव भी पर्यटन की ओर हो गया है। अवकाश पाते ही मन पंछी मनोनुकूल स्थान पर भ्रमण हेतु जाना चाहता है। अधिकांश पर्यटन स्थलों का जुड़ाव किसी न किसी प्रकार से अध्यात्म भावना से अवश्य होता है। फलस्वरूप व्यक्ति के मन में पवित्र भावनाओं का जागरण होता है और भाव प्रवाह की गति अध्यात्म उन्मुख होने लगती है। सत्य तो यह है कि –

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सब करते हैं शान्ति की तलाश।
दरक रहे सम्बन्ध और छूटा है स्नेह युक्त विश्वास।

क्योंकि

उपभोक्तावादी संस्कृति और भौतिकतावादी जीवन दृष्टि।
आधुनिकता की चकाचौंध में, धुंधलाई अध्यात्म सृष्टि।।
आस्था, परम्परा, जीवन–मूल्यों का हो रहा निशिदिन ह्रास।
नीति और शुभ रीति घटी, नास्तिकता करती है उपहास।।
ऐसी विषम स्थिति में, मन होता विचलित और उदास।
मनसिक सुस्वास्थ्य हेतु, मानव–मन करता है अगणित प्रयास।।
मानस को प्रमुदित करने हित आता है भ्रमण का तब सुविचार।
तन–मन को स्वस्थ बनाता पर्यटन, बनता औषधि और उपचार।।
पर्वत, नदी और झरने, पशु–पक्षी या मंदिर, गुरूद्वार।
दुर्ग, किले हों या हों लोक के इन्द्रधनुष से रंग अपार।।
जगन्नियन्ता की अजेय शक्ति का है सर्वत्र प्रसार।
जिनके सान्निध्य से शीघ्र दूर होते हैं तन–मन के विकार।
पर्यटन बनाता है मानस को जिज्ञासाओं का भंडार।
स्थल–विशेष के बारे में खुलते अनगिन रहस्य के द्वार।
उद्‌गम, विकास, इतिहास, परम्परा, किंवदन्तियों का होता ज्ञान।
अन्तर्कथा खोलती ज्ञान–चक्षु, होता अध्यात्म रूझान।
निश्चय ही पर्यटन अर्थोपार्जन और मनोरंजन का द्वार।
साथ ही ज्ञान, भक्ति और आध्यात्मिक उन्नयन का भी आधार।

आध्यात्मिक पर्यटन आज युवा पीढ़ी को पुनः अपनी संस्कृति और संस्कारों से रू–ब–रू करवाता है। अतः आध्यात्मिक दृष्टि से पर्यटन का प्रसार स्वस्थ भारत, सम्पन्न भारत, सुसंस्कृत और नीतिमान भारत का आधार स्तम्भ है। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

***सह आचार्य**
हिन्दी विभाग
श्री रकंपा राज.स्ना. महा. किशनगढ़ (राज.)

सन्दर्भ सूची

1. अहा! जिंदगी (पत्रिका) – अप्रेल 2014, पृ0 17
2. हिन्दी साहित्य का इतिहासः डॉ. चातक, डॉ. राजकुमार शर्मा–पृ. 98
3. (रवीन्द्रनाथ ठाकुर) अहा! जिंदगी (पत्रिका) – अप्रेल 2014, पृ. 8
4. राजस्थान की संस्कृति कला एवं परम्परा – डॉ. रेणु मीना, डॉ. सुमन ढाका–पृ. 15
5. जाह्नवी (पत्रिका)
6. निजी डायरी से